लेखक परिचय

नाम	:	डॉ. नीता त्रिवेदी
जन्म	:	26 जून 1979, उदयपुर (राज.)
शिक्षा	:	एम. ए. (हिन्दी), पीएच.डी., नेट।
प्रकाशन	:	पुस्तक – कथाशिल्पी नरेन्द्र कोहली (2014), विश्व में राम (2021)। विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में शोध आलेख प्रकाशित।
अध्ययन-क्षेत्र	:	कथा-साहित्य, भक्तिकालीन काव्य, समकालीन कविता, लोक साहित्य एवं साहित्य और सिनेमा।
सम्प्रति	:	सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)
सम्पर्क	:	501, रिद्धि-सिद्धि पार्क, न्यू नवरत्न कॉम्प्लेक्स, भुवाणा उदयपुर – 313001 (राज.)
दूरभाष	:	9950960999
ई-मेल	:	nkntrivedi@gmail.com

RAINA BOOK CENTER UDAIPUR
RBC
9 788193 053737
₹ : 200.00

लघुकथाओं का वृहद संसार (समीक्षात्मक आलेख) डॉ. नीता त्रिवेदी
RBC

लघुकथाओं का वृहद संसार

(समीक्षात्मक आलेख)

452

सम्पादक
डॉ. नीता त्रिवेदी

ISBN : 978-81-930537-3-7
© डॉ. नीता त्रिवेदी
प्रथम संस्करण : 2022
लघुकथाओं का वृहद् संसार

प्रकाशक :
रैना बुक सेन्टर
उदयपुर (राज.)

आवरण :
एन. वी. आर्ट, उदयपुर

टाइप सेटिंग :
देवेन्द्र कम्प्यूटर, दिल्ली

मूल्य : ₹500

सम्पादकीय

आज लघुकथा पूर्ण रूप से एक स्वतन्त्र विधा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है। आठवें-नवें दशक में संघर्ष के साथ हिंदी लघुकथा ने अपनी स्थिति को साहित्य जगत में स्थापित किया है। बीसवीं सदी में लघुकथाकारों की एक सशक्त पीढ़ी ने अपनी लेखनी के माध्यम से इस विधा को बहुत समृद्ध किया है। माधव राव सप्रे की 'एक टोकरी भर मिट्टी' से प्रारम्भ होती लघुकथा अद्यतन अपनी एक समृद्ध परम्परा के साथ साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बना रही है। लघुकथा परम्परा के प्रारम्भिक लघुकथाकारों ने साहित्य की अन्य विधाओं के साथ-साथ जाने-अनजाने लघुकथाओं की भी रचना की क्योंकि इनकी रचनाओं को लघुकथा का नाम भी बाद में दिया गया। स्वयं लेखक भी उन रचनाओं को कहानी, छोटी कहानी ही मानते रहे।

इस प्रकार जाने-अनजाने साहित्य के आँगन में लघुकथा के बीज अंकुरित हो रहे थे। इन्हें अपनी लेखनी से सींचने का प्रयास जिन कथाकारों ने किया उनमें प्रमुख हैं—रमेश बतरा, बलराम अग्रवाल, कमल चोपड़ा, भगीरथ परिहार, कृष्ण कमलेश, सतीश दुबे, बलराम, युगल, विक्रम सोनी, नरेन्द्र कोहली, चित्रा मुद्गल, सूर्यकान्त नागर, जगदीश कश्यप, सतीश राजपुष्करणा, पृथ्वीराज अरोड़ा, अशोक भाटिया, सुकेश साहनी, असगर वजाहत, दामोदर खडसे, प्रेम जनमेजय, रामेश्वर कम्बोज, सुदर्शन वशिष्ठ, विष्णु नागर, माधव नागदा, डॉ. रामकुमार घोटड़, हरिशंकर शर्मा, सुभाष नीरव, अमरीक सिंह दीप, जसवीर चावला, अवधेश कुमार, चैतन्य त्रिवेदी, एन. उन्नी, सत्यनारायण, विपिन जैन, पूरन मुद्गल, योगेन्द्र दत्त शर्मा, प्रेम कुमार मणि, अशोक गुप्ता, शैलेंद्र सागर आदि। इन सभी लघुकथाकारों ने लघुकथा को रचनात्मक ऊँचाइयाँ प्रदान की।

अनुक्रम

1. खड़ी बोली का कथा—गद्य और लघुकथा का पुनर्प्रस्फुटन
   —*डॉ. बलराम अग्रवाल* 11
2. मुट्ठी भर आसमान के लिए : लघुकथा में स्त्री विमर्श—
   भगीरथ परिहार 22
3. लघुकथा : संश्लिष्ट सृजन-प्रक्रिया—*डॉ. कमल चोपड़ा* 28
4. आधुनिक हिंदी लघुकथा की अवधारणा, विकास एवं परिभाषा
   —*डॉ. रामकुमार घोटड़* 44
5. लघुकथाओं में प्रतिबिम्बित मानवीय संवेदनाएँ—*डॉ. नीतू परिहार* 60
6. संवेदनाओं की सुगन्ध से महकती लघुकथाएँ—*डॉ. नवीन नन्दवाना* 69
7. लघुकथा की भूमिका और माधव नागदा की संवेदना
   —*डॉ.आशीष सिसोदिया* 79
8. लघुकथा साहित्य : कुछ विचार-बिन्दु—*डॉ. कुलवन्त सिंह* 88
9. व्यवस्था की विसंगतियों की धारदार अभिव्यंजना :
   असगर वजाहत की लघुकथाएँ—*डॉ. प्रीति भट्ट* 96
10. सामाजिक सरोकारों का आईना : बोनसाई—*डॉ. नीता त्रिवेदी* 104
11. घाव करे गम्भीर : सामाजिक विसंगतियों को अभिव्यक्त
    करती लघुकथाएँ—*डॉ. ममता पानेरी* 114
12. पद्मजा शर्मा की लघुकथाओं में मानवीय संवेदना—*डॉ. उषा शर्मा* 121
13. संवेदना और सामाजिक समरसता से जुड़ी लघुकथाएँ :
    फूलों वाली दूब—*डॉ. शगुफ्ता सैफी* 128
14. लघुकथाकार गोपी भैया कहिन (उवाच)—*शेख शहजाद उस्मानी* 136
15. लघुकथा : हास्य एवं व्यंग्य—*रोहित बंसल* 145
16. हिंदी के लघुकथाकार एवं उनकी विशाल कथादृष्टि—*बबीता गुप्ता* 151
17. हिंदी लघुकथा : लघु कलेवर में व्याप्त गुरुत्तर वैश्विक मूल्य —
    डॉ. ज्योत्सना स्वर्णकार 155
18. हिंदी लघुकथा : परिचय, स्वरूप और परिदृश्य—
    तरुण पालीवाल, शोधार्थी 162

8. प्रकारान्तर : नौकरी, रमेश बतरा हिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली 1991, पृ. 218
9. प्रकारान्तर : नौकरी, रमेश बतरा हिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली 1991, पृ. 218
10. प्रकारान्तर : बीच बाजार, रमेश बतरा हिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली 1991, पृ. 220
11. प्रकारान्तर : कुलटा, रूपसिंह चन्देलहिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली 1991 पृ. 231
12. प्रकारान्तर : बौना आदमी, हीरालाल नागरहिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली 1991 पृ. 275
13. प्रकारान्तर : बौना आदमी, हीरालाल नागर हिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली 1991पृ. 276

❑❑❑

6

संवेदनाओं की सुगन्ध से महकती लघुकथाएँ

—डॉ. नवीन नन्दवाना
सह आचार्य, हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज०) 313001
मो. 9828351618
nandwana.nk@gmail.com

हिंदी जगत में कथा का संसार बड़ा ही व्यापक है। अन्य विधाओं की भाँति कथा साहित्य पाठकों का सर्वाधिक प्रिय विषय रहा है। समय के साथ-साथ आए बदलावों ने साहित्यिक लेखन और पठन-पाठन को भी प्रभावित किया। इसी परिवर्तन की धारा में हिंदी जगत में लघुकथा विधा का अवतरण हुआ। लघुकथा कम शब्दों और बिना विस्तार के अपनी संवेदना और उद्देश्य को पाठकों तक पहुँचाने में सक्षम है। लघुकथा से अभिप्राय किसी कहानी के सार-संक्षेप से कदापि नहीं है। "आधुनिक कहानी के संदर्भ में 'लघुकथा' का अपना स्वतन्त्र महत्त्व एवं अस्तित्व है। प्रेमचन्द, प्रसाद से लेकर जैनेन्द्र, अज्ञेय तक इस धारा की एक शक्तिशाली गति है। ...जीवन की उत्तरोत्तर द्रुतगमिता और संघर्ष के फलस्वरूप इसकी अभिव्यक्ति की संक्षिप्तता ने आज कहानी के क्षेत्र में लघुकथाओं को अत्यधिक प्रगति दी है।"[1] विकीपीडिया पर लघुकथा को समझाते हुए वर्णित है कि—"हिंदी साहित्य में लघुकथा नवीनतम् विधा है। इसका श्रीगणेश छत्तीसगढ़ के प्रथम पत्रकार और कथाकार माधव राव सप्रे की 'एक टोकरी भर मिट्टी' से होता है। हिंदी की अन्य सभी विधाओं की तुलना में अधिक लघु आकार होने के कारण यह समकालीन पाठकों के ज्यादा करीब है और सिर्फ इतना ही नहीं यह अपनी विधागत सरोकार की दृष्टि से भी एक पूर्ण विधा के रूप में हिंदी जगत् में